बपतिस्मा क्यों अतिआवश्यक है

(Why baptism really matters)

फ्रेद पीयर्स द्वारा

By Fred Pearce

बपतिस्मा क्यों अतिआवश्यक है?

हमे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए।

निसन्देह आज लोग कह सकते है कि, "बपतिस्में के विषय में इतना क्या सोचना यह एक रिवाज मात्र ही तो है। चर्च के अगुवे द्वारा बच्चे के सिर पर पानी छिडकना या डुबकी लगवाना? उससे क्या फर्क पडता है, इसकी चर्चा करने में आप अपना समय व्यर्थ कर रहे है।"

इसका संक्षेप में उत्तर है, कि नये नियम में बपतिस्में के विषय में यीशु मसीह व प्रेरितो के द्वारा जानकारी दी गयी है। सत्य को जानने के लिये हमारे पास एक मात्र स्रोत बाइबल है यदि हम यह जानना चाहते है कि मसीह कौन है? उसने अपने शुष्यों को क्या सिखाया? क्या आज्ञा दी? इन सबका उत्तर पाने के लिये हमे बाइबल में जाना पडेगा। बाइबल के अलावा कही ओर देखना मनुष्य के विचार पर भरोसा करना है, वह विचार चाहे किसी व्यक्ति का हो, समूह का हो, अथवा अगुवो की सभा का हो। हमारे लिए आवश्यक वह है जो बाइबल बताती है, यदि मसीह और उसके चुने हुए प्रेरितो ने बपतिस्मा के विषय में कुछ बताया है तो हमारे लिए वह जानना अति अवश्यक है।

अब प्रश्न यह है कि मसीह ने क्या सिखाया और क्या आज्ञा दी तथा प्रेरितों ने उसके परिणाम स्वरुप क्या किया।

"पानी से जन्म"

नीकुदेमुस, यहूदी अगुवा, जो रात में उसके पास आया यीशु ने उससे कहा, *"यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"* जब नीकुदेमुस ने इन शब्दो को नही समझा तो यीशु मसीह उन्हे आगे समझाते है

"जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" (यूहन्ना 3:3,5) यह बपतिस्मा के लिए स्पष्ट पद है, यूहन्ना बपतिस्मा दाता निरन्तर मन फिराने का प्रचार करता रहा और यीशु ने यूहन्ना से यह कहते हुए बपतिस्मा लिया कि *"अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।"* (मत्ती 3:15) इसमें कोई सन्देह नही है कि जब यीशु कहता है *"जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे..."* तब वह कह रहा है कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए एक स्त्री या पुरुष को बपतिस्मा लेना अति अचश्यक है।

यह इस स्पष्ट आज्ञा द्वारा प्रमाणित हो जाता है, जो यीशु स्वर्ग की ओर जाते समय अपने शिष्यो को देता है:

> "इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।" (मत्ती 28:19-20)

यीशु मसीह के स्वर्ग जाने के बाद प्रेरितो के द्वारा किये गये प्रचार में बपतिस्मा की शिक्षा भी सम्मिलित थी।

प्रेरितों ने क्या किया

लेकिन प्रेरितो ने इस आज्ञा को कैसे व्यवहार में उपयोग किया, यहां प्रेरितों के द्वारा व्यवहारिक जीवन में उपयोग की गयी बातो को स्वष्ट किया गया है, हम इन्हे विस्तार से देखेगें।

प्रेरितों के काम 2:36-38 - पतरस ने अपने सुनने वालो को बताया कि येरुशलेम में जिस यीशु को क्रूस पर चढाया वह प्रभु भी है और मसीह भी। यह सुनकर उनके हृदय छिद गये उन्होने कहा

"'हम क्या करें?'"

पतरस ने उन्हे उत्तर दिया

"'मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से *बपतिस्मा लो*'"

प्रेरितों के काम 2:41 - हमे बताया गया है कि उन्होने कैसा उत्तर दिया

"अतः जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने *बपतिस्मा लिया*।"

प्रेरितों के काम 8:12 - फिलिप्पुस ने सामरिया में सुसमाचार प्रचार किया

"परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री, *बपतिस्मा लेने लगे*।"

प्रेरितों के काम 8:36,38 - फिलिप्पुस द्वारा यह सुनकर की यीशु ने अपने जीवन के द्वारा पवित्र शास्त्र की भविष्यवाणीयो को पूरा किया। खोजे ने कहा:

"'मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है।' ... और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने खोजा को *बपतिस्मा दिया*।"

फिलिप्पुस ने खोजे को बपतिस्मा का अर्थ तथा महत्व समझाया तभी वह यह कह पाया।

प्रेरितों के काम 9:18 - तारसी का शाऊल जब दमिश्क के रास्ते पर जा रहा था तो यीशु का दर्शन पाकर अन्धेपन का शिकार हो गया फिर हनन्याह के ये शब्द सुने तब:

"तुरन्त उसकी आँखों से छिलके-से गिरे और वह देखने लगा, और उठकर *बपतिस्मा लिया*।"

प्रेरितों के काम 16:14-15 - लुदिया, "एक भक्त स्त्री" ने पौलुस द्वारा किये गये प्रचार को सुन और *बपतिस्मा लिया*।

प्रेरितों के काम 16:30-33 - फिलिप्पी के दरोगा ने पौलुस द्वारा किये गये प्रचार को सुन रखा था इसलिये उसने कहा

"'उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?'"

पौलुस और सीलास ने उन्हे प्रभु का वचन सुनाया जिसके परिणाम स्वरुप उन्होने *बपतिसा लिया*।

प्रेरितों के काम 19:3-5 - इफिसुस में पौलुस को कुछ विश्वासी मिले जो केवल यूहन्ना के बपतिस्मा को जानते थे। पौलुस ने उन्हे बपतिस्मा का अर्थ समझाया

"'यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।' यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में *बपतिस्मा लिया*।" (प्रेरितों के काम 19:4-5)

कुरनेलियुस

कुरनेलियुस की घटना को अन्त में इसलिए रखा गया है, क्योंकि उसकी दशा भी आधुनिक समय जैसी थी वह रोमी सैनिक था, उसने इस्राएल के परमेश्वर को जाना तथा उसकी आराधना की। *"वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था।"* (प्रेरितों के काम 10:2)

क्या ही प्रशसनीय आदमी! परमेश्वर का भक्त प्रार्थना और भले कार्य करने वाला - निश्चय ही उसे कुछ करने की आवश्यकता नही थी, पवित्र शास्त्र बताता है कि उसने किया प्रेरित पतरस को आज्ञा मिली की वह उसके पास जाऐ तथा उसे समझाये, *"वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा।"* (11:14) उसने मसीह में परमेश्वर के कार्यो को समझाया, *"जो*

कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।" (10:43)

अब पतरस और उसके साथी इस कार्य हेतु अन्य जातियों में जाने के लिये इच्छुक नही थे, क्योंकि वे उन्हे विश्वासियो की सभा से बाहर मानते थे, परमेश्वर ने पतरस को एक दर्शन देकर स्पष्ट किया और सिखाया (10:9-16) जिसे परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया तू उससे अशुद्ध जैसा व्यवहार क्यो करता है। जब कुरनेलियुस ने पतरस के प्रचार को सुनकर वह विश्वास किया, तब परमेश्वर ने यहुदियों को प्रभावित करने के लिये एक और चिन्ह दिया *"पवित्र आत्मा वचन के सब सुननोवालों पर उतर आया।"* (पद 44) उपस्थित यहुदियों को आश्चर्य चकित करने के लिए। यह परमेश्वर के द्वारा दिया गया विशेष दान था जिससे परमेश्वर यहुदियो को स्पष्ट करना चाहता था कि वह अन्य जातियों को भी विश्वास में स्वीकार करेगा पतरस की प्रतिक्रिया बडा बिर्देश देती है:

> "'क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएँ...?' और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए।" (पद 47-48)

ध्यान देने योग्य यहाँ चिशेष बात यह है कि यद्यपि कुरनेलियुस और उसके घराने को पवित्र आत्मा का दान मिला, तो भी पतरस उन्हे बपतिस्मा की आज्ञा देता है। क्या बपतिस्मा की आज्ञा का इससे बडा प्रमाण हो सकता है?

इसलिए यह स्पष्ट है कि बपतिस्मा केवल शरीर को धोना नही है बल्कि उद्धार पाने की प्रक्रिया में अर्थ पूर्ण कदम है।

हम उद्धार कैसे पा सकते है

इस बात को देखते हुए समस्या का समाधान असम्भव सा लगता है। क्योंकि इसमें निरन्तर यह कठिनाई रही है कि मनुष्य परमेश्वर द्वारा निर्धारित की गयी जीवन शैली के अनुसार जीवन व्यतीत नही कर सका। इस असफलता को

बाइबल में "पाप" कहा गया यह तरीका हम इसलिए नही त्याग सकते क्योंकि यह प्रचलित नही है, और हम इसे पसन्द नही करते, परमेश्वर ने स्वयं इसी तरीके को मनुष्य की असफलता दर्शाने के लिए उपयुक्त किया है। पुराने नियम में उसके भविष्यवक्ताओ ने इसका उपयोग इस्राएल के पाप के लिये किया, नये नियम में यीशु ने तथा ऐसा ही उसके प्रेरितो ने किया, परमेश्वर के संदेश में मानव पाप की सच्चाई स्पष्ट दिखाई देती है। जिससे हम इसे नजरअंदाज करके नही कह सकते कि इससे कोई फर्क नही पडता। इसमें कोई सन्देंह नही कि परमेश्वर इसे गम्भीरता से न्याय करेगा।

इससे बढकर उसने मानव के लिये रुकावट को छाँटकर उद्धार का मार्ग तैयार किया है, जो उसकी आज्ञा का पालन करते है उसने ऐसा अपने पुत्र यीशु को नासरत की एक यहुदी स्त्री मरियम के द्वारा पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से पैदा करके किया। यह घटना लूका रचित सुसमाचार में स्पष्ट रुप से लिखी गयी है।

> "'पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्राधन की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।'" (लूका 1:35)

लेकिन परमेश्वर का वास्तविक उद्देश्य यह है कि उसका पुत्र मानव माता से जन्म ले। यह बात स्वर्गदूत के शब्दो में युसुफ को बतायी गयी:

> "'तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि *वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा*।'" (मत्ती 1:21)

यीशु की मृत्यु

कैसे यह पापो से उद्धार का तात्पर्य हो सकेगा। इस प्रश्न का अद्भुत उत्तर यीशु के स्वभाव और अन्त में क्रूस पर उसकी मृत्यु में समाहित है, उसके जीवन को जानने के लिए नये नियम के लेखो में यह स्पष्ट है कि यीशु का स्वभाव ठीक हमारे समान था। अनिवार्य रुप से मानवीय देह के कारण उसका स्वभाव भी माँ के समान सामान्य था। इब्रानियों की पत्री हमें बताती है कि वह *"मांस और लहू"*

में हमारे समान था। (2:14) "मांस और लहू" लेकिन इसका अर्थ है कि उसने हर प्रकार से वैसा ही अनुभव किया जैसा हम करते है, यह वही बात है जो इब्रानियों की पत्री में आगे लिखी गयी है।

> "उसने परीक्षा की दशा में दुःख उठाया ... वह *सब बातों* में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।" (इब्रानियों 2:18, 4:15)

सामान्य रुप से यीशु ने मानव स्वभाव की सब इच्छाओ को अनुभव किया वह अपनी इच्छाओ को पूरा करने के लिए, अपने ऐशो आराम के लिए, अपनी सारी भौतिक आवश्यकताओ से सन्तुष्ट होने के लिए, अपने अंहकार को ऊपर रखने के लिए स्वयं को धनी तथा शक्तिशाली बनाने की इच्छा के दबाव में था, लेकिन अन्य स्त्री पुरुष जो इस दुनिया में आये उनके विपरीत उसने अपनी भौतिक आवश्यकताओ को पूरा नही किया। उसने अपनी इच्छाओ को त्यागा और अपने आप को परमेश्वर का विश्वास योग्य आज्ञाकारी बनाये रखा।

अब इसका परिणाम बडा महान है। इतिहास में पहली बार किसी मनुष्य ने पाप पर विजय प्राप्त की। पाप को उसी क्षेत्र में हराया गया जो उसका उदगम स्थान है, अर्थात् मनुष्य का हृदय (मानव स्वभाव)। स्त्री पुरुष जिस कार्य को करने में असफल रहते है वही कार्य यीशु मसीह ने पूरा किया।

पूर्ण मानव होते हुए और निष्पाप जीवन व्यतीत करते हुए यीशु स्वयं को परमेश्वर के सम्मुख मेमने के समान चढा सका जो *"जगत का पाप उठा ले जाता है"* (यूहन्ना 1:29) दूसरे शब्दों में उसने स्वेच्छा से स्वयं को पाप के बलिदान हेतू क्रूस की मृत्यु के लिए दे दिया। मानवता के प्रतिनिधी के रुप में उसने पाप को नाश किया तथा परमेश्वर के धार्मिक न्याय का समर्थन किया। इससे बढकर क्या हो सकता है कि उसने स्वभाव में पाप को नाश किया, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति पाप के अधीन हो जाता है, "मानव देह में"। इस प्रकार उसने अपने जीवन को "पाप के लिए बलिदान" कर दिया (रोमियो 8:3)। अद्भुत रीति से, जब कि यीशु स्वयं पाप रहित था, तो परमेश्वर ने भी न्यायी होने के कारण उसे मृतको में से पुनःजीवित करके अमरता और सामर्थ्य प्रदान की।

ऐसे ही यह हमारी कैसे सहायता करता है? हम कभी सिद्ध जीवन व्यतीत नही कर सकते और न ही कभी हमसे ऐसी आशा की जा सकती है। जब तक हम इस पापमय देह में जीवित है।

परमेश्वर की शर्ते

इसका उत्तर किसी चमत्कारिक कार्य में नही है, परमेश्वर हमें अचानक स्वतः नही बदलेगा, यदि हम ऐसा कह दे कि हम उसके पुत्र पर विश्वास करते है, और न ही उसके बेटे के बलिदान के कारण वह हमें निष्पाप समझकर हमारा आदर करेगा, उसकी दया और अनुग्रह पाप क्षमा हेतू कुछ शर्तो पर आधारित है। पहली शर्त यह है कि जो स्त्री और पुरुष मसीह में होकर परमेश्वर के सम्मुख आते है वे अपने बारे में सच्चाई को जाने, और क्रूस पर यीशु की मृत्यु को पाप का अवश्यक प्रायश्चित जाने। फिर वे अपना जीवन स्वयं को खुश करने के लिए नही बल्कि यीशु के स्वभाव के समान "अनुग्रह और सच्चाई" में व्यतीत करे।

तब परमेश्वर हमें सब आरोपो से मुक्त करेगा तथा अपने साथ हमारा सम्बन्ध स्वीकारेगा, केवल तभी वह हमारे साथ अपने परिवार के सदस्यो, उसके बेटे बेटियो, के समान व्यवहार कर सकता है। जिसका मुखिया उसका अपना एकलौता पुत्र यीशु है।

पश्चाताप और मन परिवर्तन

अब हम बाइबल के दो पहलुओ को समझने योग्य हो गये है, ये दोनो पहलु, यीशु को स्वर्ग में उठाये जाने के समय पतरस द्वारा यरुशलेम के लोगो से की गयी याचना में है:

> "'इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ...'"
> (प्रेरितों के काम 3:19)

यह बडे दुख की बात है कि ये दोनो पहलु, पश्चाताप और मन परिवर्तन, आधुनिक समय में दुरुपयोग किऐ जा रहे है। सच्चे पश्चाताप का अर्थ है मन का बदलना, जो विचारधारा है। तब हम जानना चाहेगें उत्तर "मन किस विषय में परिवर्तित हो?" स्पष्ट है, जिसके विषय में हम पहले से जान चुके है, यह हमारे मन का परिवर्तन है। हमारे अपने विषय में, बाइबल के अनुसार जो जीवन शैली हमारे लिए निर्धारित की है, उसमें हमारी असफलता से हम पापी है। तब इस आज्ञा का अनुसरण करे "बदल जाओ" इसका तात्पर्य है पीछे मुड जाना और जिस दिशा में जा रहे थे उसके विपरीत दिशा में चलना, यह सच्चे पश्चाताप का व्यावहारीक परिणाम है। यह इस बात को अंगीकार करना है कि हमें अपने जीवन को परिवर्तित करने की आवश्यकता है। तथा यीशु की आज्ञा व परमेश्वर की इच्छा के साथ एक मत होकर बिताऐ।

लेकिन पतरस अपने संदेश में यरुशलेम के लोगो को एक स्तर और आगे तक बताता है।

> "'मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।'" (प्रेरितों के काम 2:38)

यह और भी स्पष्ट हो गया कि पतरस बपतिस्मा देने की आज्ञा को इसमें क्यों जोडता है। जब हम मान लेते है कि यीशु और प्रेरितो के दिनो में बपतिस्मा पानी में पूर्ण रुप से डूबकर लिया जाता था। जिसका अर्थ प्रेरित पौलुस के द्वारा रोमियों की पत्री में बताया है। वह कहता है

> "क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, *उसकी मृत्यु* का बपतिस्मा लिया। अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ *गाड़े* गए।" (रोमियों 6:3-4)

या जैसे वह कुलुस्सियों को लिखता है:

> "उसी के साथ बपतिस्म में *गाड़े* गए।" (कुलुस्सियों 2:12)

लेकिन वासव में केवल मृत लोगो को ही गाड़ा जाता है, जो जीवित है उन्हें नही? ठीक यही पौलुस भी कहते जाता है वह कुलुस्सियों को स्मरण दिलवाता है, जो अपनी पहली जैसी स्थिती के साथ सुसमाचार का अनुसरण कर रहे थे:

"अपने अपराधों और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्द थे।" (कुलुस्सियों 2:13)

गाड़े गये ... और पुर्नजीवित हुए

उसका अर्थ स्पष्ट है कि परमेश्वर की दृष्टि में वे मृत्को के समान ही थे, क्योंकि उनकी शारीरिक अभिलाषाऐं अनियन्त्रित थी। उन्हे कोई आशा नही थी, बल्कि उनके लिए मृत्यु थी, उन्हे अपने विषय में यह सच्चाई अंगीकार करने की आवश्यकता थी, और बपतिस्में में अपनी मृत्यु के समान पानी में नीचे जाकर यह स्वीकार करने की आवश्यकता थी, कि यह परमेश्वर का पाप के ऊपर न्याय है, फिर वे अवश्य पानी से ऊपर जीवन के नये उद्देश्य के साथ आते है।

"ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चले।" (रोमियों 6:4)

और जैसा वह कुलुस्सियों को आगे लिखता है:

"जैसा उसके साथ बपतिस्मा में गाडे गये ... उसके साथ जी भी उठ।" (कुलुस्सियों 2:12)

यह समान रुप से स्पष्ट है, जैसे यीशु मसीह मृतको में से नये तरह के जीवन, अमरता के लिए जी उठे वैसे ही बपतिस्मा में विश्वासी नये जीवन के लिए पानी से बाहर आते है। विश्वासी का अब भी भौतिक स्वभाव पहले के समान है। लेकिन उसका वाह्य रुप बदल गया है। वह इस बात को अंगीकार करता है कि यदि वह अपनी स्वाभाविक वासनाओ के साथ जीवन व्यतीत करेगा तो उसका अन्त अनन्त मृत्यु होगी अब उसका उद्देश्य परमेश्वर की इच्छा और मसीह की आज्ञा होगी।

यीशु मसीह जब नीकुदेमुस को कह रहे है, तो उनका यही तात्पर्य है *"तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।"* (यूहन्ना 3:7) प्रेरित पौलुस कहता है कि व्यवहारिक रुप में इसका क्या अर्थ है,

> "इसलिये पाप तुम्हारे नश्वर शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के आधीन रहो ... तुम पर पाप की प्रभुता न होगी।" (रोमियों 6:12,14)

दूसरे शब्दों में तुम्हारी स्वाभाविक इच्छाए तुम पर शासन न करे और तुम्हे एक तरह के दासत्व में न डाले। वस्तुतः वह कहता है-

> "अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो।" (रोमियों 6:13)

इसलिये गम्भीर विश्वासी ने अपना स्वामी बदल दिया है, क्योंकि उसने अपना मन बदल दिया है, बाइबल के सन्दर्भ में जो पश्चाताप है। उसका यह नया जीवन है, क्योंकि यह उसका नया दृष्टिकोण है, इस प्रकार उसका "नया जन्म" हुआ। प्रेरितो ने इस परिवर्तन को "नया व्यक्ति बनना" कहकर प्रस्तुत किया है।

> "तुम पीछले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व ... उतार डालो ... अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ ... नये मनुष्यत्व को पहिन लो।" (इफिसियों 4:22-24)

> "सब के लिये मरा कि जो जीवित है ... अपने लिये न जीएँ परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा ... यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है।" (2 कुरिन्थियों 5:15,17)

एक नया जीवन

इस प्रकार बपतिस्मा को बाइबल में अति महत्त्पूर्ण घटना के रुप में प्रस्तुत किय गया है। इस प्रकार एक विश्वासी यह समझ सकता है कि उसे मृत्यु से बचने की अवश्यकता है। और साथ ही यीशु के स्वभाव के समान जीवन व्यतीत करने की

इच्छा प्रकट करता है। अपने नये जीवन का आरम्भ इस विश्वास के साथ करता है कि परमेश्वर उसे अपनी संतान के रुप में स्वीकार करेगा। यह सब कुछ एक यीशु समभवतः नही कर सकता, बच्चे इस बात को समझने तथा इसके अनुसार अपना प्रति उत्तर देने योग्य नही होते। और न ही कोई दूसरा उनके स्थान पर उनके प्रतिनिधी के रुप में खडा हो सकता है, पवित्र शास्त्र में एक व्यक्ति के स्थान पर दूसरे को कभी स्वीकार नही किया गया है। हमें स्वयं ही *"अपने उद्धार के कार्य"* को पूरा करना है (फिलिप्पियों 2:12) - कोई दूसरा हमारे लिये इसे नही कर सकता।

इसलिए नये नियम में शिशु को बपतिस्मा दिये जाने का कोई उदाहरण नही है, केवल व्यस्क मनुष्यो ने ही बपतिस्मा लिया है, जो पूर्ण रुप से यह जानते है कि वे क्या कर रहे है। आरम्भिक कलिसिया के लेखो में सन् 150 ई. तक शिशु बपतिस्मा का कोई उदाहरण नही है, शहीद जस्तिन (जिसकी मृत्यु सन् 165 ई. में हुई) स्पष्ट रुप से लिखते है कि यह केवल परिपक्व मनुष्य के लिए है:

"जितनी प्रतीति हो और सिखाये हुए और हमें विश्वास हो और उस सिखाये हुए के अनुसार हम जीवन व्यतीत करे और हमे प्रार्थना करने के लिए निर्देश दिया जाये ... अपने पापो की क्षमा के लिए हमको ज्ञान और इच्छा की संतान बने तथा जल में पापी की क्षमा प्राप्त की ... (विश्वासी) उन नये जन्म तथा पापो से पश्चाताप के लिए चुने जाते है।" (एन्टी नाइसिन मसीह पुस्तकलाय, अंक 2, पृष्ट 59)

तरतुलियन (सन् 200 ई. के लगभग) इतिहास में सर्वप्रथम शिशु बपतिस्मा के विषय में लिखने वाले हुए। वह प्रेरितायी रीतियो को सर्मथन देने के लिए प्रसिद्ध थे, यह अजीब बात है कि उसने बच्चो को बपतिस्मा लेने के बढते हुए रिवाज के विरोध में लिखा। नेन्दर इतिहासकार ने लिखा है कि वह इसका बडा विरोधी था।

शीशु बपतिस्मा पवित्र शास्त्र के विपरीत

उन दिनो से लेकर सदियों तक और विशेष रुप से सोहलवी शताब्दी में, जब बाइबल की शिक्षा में जागृति आने तक बच्चो के बपतिस्मा लेने की रीति विवाद का विषय रही है। रोमन कैथोलिक चर्च ने इस रिवाज का सर्मथन किया है। क्योंकि यह चर्च का रिवाज था – एक अविश्वसनीय आधार, दूसरे इस आधार पर कहते थे कि बच्चे को इस संस्कार के बाद आने वाले दण्ड से बचा लिया जाएगा तथा इस संस्कार के बाद होने वाला नया जन्म, पवित्र आत्मा द्वारा होने वाले नये जन्म के जैसा कहलाता है, इस शिक्षा का सर्मथन पवित्र शास्त्र कही नही करता तथा यह "संस्कार द्वारा उद्धार" की स्पष्ट घटना है, यह बाइबल में वर्णित बपतिस्मा नही है।

जर्मन के विख्यात धर्म वैज्ञानिक डॉ. एल. लॉगे कहते है:

"यह अवश्य ही प्रत्येक उस पवित्र शास्त्र के पाठक द्वारा दिया गया है। जिसने वचन को ध्यान से नही पढा तथा सुनी हुई बातो पर ध्यान दिया तथा नवजात शिशु के बपतिस्मा की रीति वास्तविक मसीहियत के रुप में जानी गयी" (प्रोटेस्टेन्ट का इतिहास, पेज 221)

डीन स्टेन्ली एक दूसरे लेख में लिखते है:

"दुबाये जाने की प्रथा जैसे प्रेरितो के समय और प्राचीन काल में थी ... यह प्रचलित रीति के अनुरुप नही है, जो उत्तर और पश्चिमी लोगो की सुविधा और मानसिकता के अनुसार है ... किसी भी धार्मिक सभा का निर्णय नही ... केवल मसीह स्वतन्त्रता हेतू जनता की सर्वमान्य है, भावना है, यह बडा परिवर्तन वास्तविकता से परिवर्तित है (शिशु के बपतिस्मा की प्रथा) ... यह किसी रीतिरिवाज का सच्चाई पर विजय का विचित्र उदाहरण है" (उन्नीसवी शताब्दी का पुनर्निरीक्षण)

दूसरे शब्दो में यीशु मसीह के प्रेरितो द्वारा सिखायी गयी बपतिस्मा की प्रक्रिया की वास्तविकता को चर्चो ने पूर्ण रुप से बदल डाला, क्योंकि यह उनको असुविधा जनक या अस्वीकार करने योग्य या अच्छी नही लगी।

संशयः

अभी तक हमने जो कहा है, इस आधार पर दो बाते है, जिन पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

पहली बात कुछ ऐसे लोग होगें जो कहेगें, "मैं मानता हूँ कि जो कुछ कहा गया वह सत्य है, लेकिन मुझे नही लगता कि मुझे बपतिस्मा लेना चाहिए।" इस तरह की सोच उन लोगो में होती है। जो धर्म को भावनात्मक रुप में लेते है। यदि वे अपने अन्दर जिम्मेदारी की कमी महसूस करते है तो वे यह कहकर बात को समाप्त कर देते है कि वे अभी बपतिस्मा लेने के योग्य नही है।

लेकिन यह गलत बात है, परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम अपना ध्यान उसके वचन को समझने में लगाये और जो सच्चाई है, उसको स्वीकार करे और उसकी सेवा प्रयास करे और निर्णय ले। परमेश्वर के वचनो की यह निरन्तर विधि क्यो है, इसका एक मुख्य कारण यह है यदि एक मनुष्य इस महत्त्पूर्ण सच्चाई को समझ लेता है और फिर अपना जीवन इसके अनुसार बिताना चाहता है। तो वह व्यक्ति अलग तरह का मनुष्य बन जाता है। यदि वह निरन्तर इन शिक्षाओ में बना रहे तो उसका चरित्र उसकी मानसिकता के नवनीकरण के कारण भिन्न हो जाता है, जैसा पौलुस लिखता है, यह परिवर्तन हमेशा के लिए होता है। परमेश्वर ऐसे नये व्यक्त को अब तथा आनेवाले युग में अपनी सेवा के लिए उपयोग करेगा।

परमेश्वर की आज्ञा

लेकिन अन्ततः हम यह जान चुके है कि हमे बपतिस्मा लेना चाहिए, तब हमे अवश्य इस आज्ञा का पालन करना चाहिए। नही तो हम इसे नकारकर परमेश्वर के वचन का उल्लंघन कर रहे है। हमने जो कार्य किया है, उसका वास्तविक प्रतिफल बाद में मिलेगा, जैसे हम अपने जीवन में यह अनुभव करते है कि परमेश्वर की दृष्टिकोण हमारे पापो के प्रति क्या है, और अब हम उसके अनुग्रह की अधिकारीयो को भी सराह सकते है लेकिन पहला अवश्यक कदम यह है

कि हम अपने आप को उसके वचन के सम्मुख नम्र करे तथा वह कार्य करे जिसे करने के लिए वह कहता है।

तब कुछ लोग ऐसे भी होगे जो कहेगे "जो सब कहा गया है वह सत्य है मैं इस बात से सहमत हूँ, लेकिन में इसे अपने जीवन में अपनाकर नही जी सकता, इसलिए मैं ऐसा जीवन शुरु ही नही करना चाहता।" हम स्पष्ट कहते है – वास्तव में – यह स्पष्ट आज्ञा की बहाना बनाकर अवहेलना करना है। यदि कोई व्यक्ति यह कहता है कि वचन में दी गयी बपतिस्मा की बात सत्य है। तथा वह ऐसा नही करता है तब वह स्पष्ट रुप से परमेश्वर की आज्ञा को अस्वीकार कर रहा है।

लेकिन यह भी हो सकता कि वह जीवन की सच्चाई और दया और पवित्रता के साथ मसीह का अनुसरण करने का प्रयास करे, और ऐसा महसूस करे कि वह जीवन में इसे कभी नही छोड पायेगा। और इस प्रकार वह दोषी ठहराया जायेगा लेकिन यह गम्भीर ना समझी पर आधारित है – यह विचार, कि परमेश्वर हमसे सिद्ध जीवन जीने की आशा रखता है। परमेश्वर भली भांति हमारे स्वभाव की कमजोरियो को जानता है। भजन संहिता 103 में भजनकार ने इसका सुन्दरता से वर्णन किया है।

> "जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊंचा है, वैसे ही उसकी करुणा उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है। ... जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है।" (भजन संहिता 103:11–14)

हमें किसी तानाशाह के विषय में नही बल्कि करुणामय पिता के विषय में बात कर रहे है, जो यह चाहता है कि हम नाश न हो वरन सत्य को भली भांति पहचानकर "मन फिराए" और बचाए जाये (1 तीमुथियुस 2:4; 2 पतरस 3:9) संक्षेप में यह इन सभी को क्षमा करने के लिए तैयार है, जो अपनी असफलताओ को अंगीकार करते है, और उसकी सेवा करने की इच्छा करते है। उनके

प्रोत्साहन के लिए यीशु मसीह पिता की दाहिनी ओर उनकी मध्यस्था करने के लिए खडा है।

हमें परमेश्वर की दया पर विश्वास करना चाहिए तथा उसकी आज्ञा पालन का निश्चय करना चाहिऐ, इस आज्ञा पालन में बपतिस्मा लेना प्रथम कर्तव्य है।

सुअवसर

हमारा बपतिस्मा इस बात का प्रतीक है कि हमने अपने लिए परमेश्वर की इच्छा के प्रकाशन को समझ लिया है, यह हमारे लिए जीचन के नये मार्ग खोल देता है। हमारे अपने जीवन के लिए नये मार्ग, अनिश्चित तथा दुख भरे संसार में नये पथ पर चलना, जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय का लेने के लिए नयी सामर्थी समझ, परमेश्वर के साथ "शान्ती को नयी समझ जो हमे मसीह में उसके संग एक करता है।" जब हम सुसमाचार पर विश्वास करते है तो हमारी स्थिती परिवर्तित हो जाती है। हम अपने पापो के कारण परमेश्वर से दूर नही रहते बल्कि उसकी दृष्टि में उसके पुत्र और पुत्रियां बन जाते है, और उस राज्य के उत्तराधिकारी हो जाते है जिसे यीशु मसीह अपने दोबारा पृथ्वी पर लौटने के समय स्थापित करेगा।

यह महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है, हमें लापरवाही से इससे दूर नही रहना चाहिए।

"बपतिस्मा क्यो अति आवश्यक है" को पढ़ने के पश्चात उत्तर देने के लिए प्रश्न–

1. बपतिस्मा का क्या अर्थ है?

2. (अ) बपतिस्मा की क्या विशेष विधि है?

   (ब) अन्य विधियां सन्तोष जनक क्यों नहीं है?

3. क्या एक विश्वासी बिना बपतिस्मा के भी उद्धार पा सकता है?

4. बपतिस्मा हमें किससे बचाता है?

5. फिलिप्पुस और कूश देश का खोजा की कहानी को विस्तार पूर्वक बताइऐ? (देखिए प्रेरितों के काम 8:26–39)

अधिक जानकारी अथवा मुफ्त में बाईस पाठो के पाठ्यक्रम को प्राप्त करने के विषय में कृपया निम्न पते पर लिखे।

दि क्रिस्टडेलफियन
पो. बा. न. - 10, मुजफ्फरनगर
(यूपी) - 251002
ई-मेल
cdelph_mzn@yahoo.in

दि क्रिस्टडेलफियन
पो. बा. न. - 50, गाजियाबाद
(यूपी) - 201001
ई-मेल
christadelphiansdelhi@gmail.com

The Christadelphians
P.O. Box 50,
Ghaziabad, 201001, U.P.
christadelphiansdelhi@gmail.com

or for more information, visit us at christadelphians.in.